

बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय की धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता का अध्ययन (देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा एवं पारंपरिक अनुष्ठानों के संदर्भ में)

जयन्त मिश्रा

(शोधार्थी)

डॉ. सारिका दीक्षित

(शोध निर्देशिका),

समाजशास्त्र विभाग, आई.ई.एस.

विश्वविद्यालय,

भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का केंद्र बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय की धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता है, जिसे देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा तथा पारंपरिक अनुष्ठानों में सहभागिता जैसे प्रमुख संकेतकों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन का एकमात्र उद्देश्य बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय की धार्मिक मान्यताओं, देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा तथा पारंपरिक अनुष्ठानों की स्थिति का अध्ययन करना है। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली-सह-साक्षात्कार उपकरण का प्रयोग किया गया, जिसमें 50 कथन तथा 10 व्यक्तिगत-सूचना संबंधी प्रश्न सम्मिलित थे। मूल शोध-सामग्री में कुल 500 उत्तरदाताओं के आधार पर धार्मिक-सांस्कृतिक संकेतकों का विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार 81.8% उत्तरदाता देव-आस्था रखते हैं, 76.2% प्रकृति-पूजा से जुड़े हैं, 61.0% पूर्वज-पूजा का पालन करते हैं तथा 69.2% पारंपरिक अनुष्ठानों में सक्रिय सहभागिता करते हैं। समूह-आधारित सांख्यिकीय परीक्षण में $t(98)=2.85$ तथा $p=0.005$ प्राप्त हुआ, जबकि प्रभाव-आकार Cohen's $d=0.57$ रहा। इससे संबंधित धार्मिक-सांस्कृतिक माप में समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर का संकेत मिलता है। समग्र रूप से अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय में पारंपरिक धार्मिक विश्वास और व्यवहार आज भी सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण आधार हैं। तथापि, इन परंपराओं को स्थिर एवं अपरिवर्तनीय व्यवस्था के रूप में देखने के बजाय सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संपर्क और अंतःक्रिया के साथ निरंतर विकसित होती प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

कुंजी शब्द: आदिवासी समुदाय, धार्मिक मान्यताएँ, देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा, पारंपरिक अनुष्ठान, धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता, बैतूल

Paper Received date

05/04/2026

Publishing Date

10/04/2026

DOI<https://doi.org/10.5281/zenodo.22724927>

**IMPACT
FACTOR
5.924**

1. प्रस्तावना

भारतीय जनजातीय समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना अत्यंत विविधतापूर्ण रही है। इस विविधता में धार्मिक विश्वास, लोकपरंपराएँ, सामुदायिक अनुष्ठान, प्राकृतिक परिवेश के प्रति श्रद्धा, पूर्वजों के प्रति सम्मान तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित सांस्कृतिक व्यवहार विशेष महत्व रखते हैं। जनजातीय धार्मिक जीवन को केवल व्यक्तिगत आस्था अथवा धार्मिक कर्मकांड के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह सामुदायिक पहचान, सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक स्मृति और जीवन-पद्धति से भी गहराई से जुड़ा होता है। भारतीय जनजातीय धार्मिक परंपराओं में स्थानीय पर्यावरण, प्राकृतिक शक्तियों तथा सामुदायिक अनुभवों का प्रभाव विशेष रूप से दिखाई देता है। जनजातीय धार्मिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता प्रकृति के साथ उसका निकट संबंध है। अनेक जनजातीय समुदायों में वृक्ष, पर्वत, नदी, जलस्रोत, भूमि तथा अन्य प्राकृतिक तत्व धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माने जाते हैं। प्रकृति के प्रति यह संबंध केवल पूजा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समुदाय की आजीविका, सामाजिक व्यवहार, लोकविश्वास और सांस्कृतिक प्रतीकों से भी जुड़ा रहता है। रोवकिथ और भगवान के अध्ययन में भारतीय जनजातीय आध्यात्मिकता के संदर्भ में प्रकृति, समुदाय, धार्मिक विश्वासों तथा आध्यात्मिक जीवन के पारस्परिक संबंधों को महत्वपूर्ण माना गया है। उनके अध्ययन का उद्देश्य भारत के एक जनजातीय समुदाय की आध्यात्मिक विश्वदृष्टि और धार्मिक व्यवहारों को समझना था।

जनजातीय धार्मिक जीवन में पूर्वजों का स्थान भी महत्वपूर्ण है। पूर्वज-पूजा के माध्यम से समुदाय अपनी ऐतिहासिक स्मृति, पारिवारिक संबंधों और सामुदायिक पहचान को वर्तमान पीढ़ी से जोड़ता है। शर्मा ने ठाकुर गोंडों में पूर्वज-पूजा की निरंतरता और परिवर्तन का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया कि जनजातीय धार्मिक व्यवहार में स्थानीय परंपराओं तथा बाहरी धार्मिक प्रभावों का सम्मिश्रण दिखाई दे सकता है। उनके अध्ययन में पूर्वज-पूजा से संबंधित ऐसे व्यवहारों की चर्चा की गई है जिन्हें न तो पूर्णतः पारंपरिक जनजातीय और न ही पूर्णतः हिंदूकृत कहा जा सकता है। मध्यप्रदेश का आदिवासी समाज इस दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। राज्य के विभिन्न आदिवासी समुदायों में धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक व्यवहारों की विविध अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती हैं। बैतूल जिला भी आदिवासी सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ धार्मिक विश्वासों, प्रकृति के साथ संबंध, पारंपरिक अनुष्ठानों तथा सामुदायिक सांस्कृतिक व्यवहारों को समझना समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए उपयोगी है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी संदर्भ में बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय की धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता का अध्ययन करता है।

समकालीन जनजातीय अध्ययन यह संकेत करते हैं कि जनजातीय धार्मिक जीवन को केवल "परंपरागत" और "स्थिर" व्यवस्था के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। वर्तमान समय में जनजातीय

समुदाय विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों के संपर्क में हैं। ऐसे संपर्कों के परिणामस्वरूप कहीं निरंतरता, कहीं परिवर्तन, कहीं अनुकूलन तथा कहीं विभिन्न धार्मिक तत्वों का सह-अस्तित्व दिखाई दे सकता है। इसलिए जनजातीय धार्मिक जीवन के अध्ययन में निरंतरता और परिवर्तन दोनों को समान रूप से ध्यान में रखना आवश्यक है। इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन का केंद्र सीमित एवं स्पष्ट रखा गया है। अध्ययन में धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता को चार प्रमुख संकेतकों—देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा तथा पारंपरिक अनुष्ठानों में सहभागिता—के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है। इससे अध्ययन की समस्या, उद्देश्य, परिकल्पना, परिणाम और निष्कर्ष के मध्य स्पष्ट तार्किक संबंध स्थापित होता है।

2. अध्ययन की समस्या

आधुनिकीकरण, शिक्षा, संचार साधनों के विस्तार, बाजार व्यवस्था, प्रशासनिक संपर्क तथा विभिन्न धार्मिक-सांस्कृतिक समुदायों के साथ बढ़ती अंतःक्रिया के कारण आदिवासी समाज की जीवन-पद्धति में परिवर्तन की प्रक्रियाएँ दिखाई दे रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि पारंपरिक धार्मिक विश्वासों और व्यवहारों की वर्तमान स्थिति क्या है तथा वे किस सीमा तक समुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में निरंतर बने हुए हैं। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन की समस्या को निम्न प्रश्न के रूप में अभिव्यक्त किया है— *“बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय में देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा तथा पारंपरिक अनुष्ठानों की वर्तमान स्थिति क्या है और इन धार्मिक-सांस्कृतिक व्यवहारों से समुदाय की पारंपरिक सांस्कृतिक निरंतरता किस प्रकार परिलक्षित होती है?”* यह समस्या अध्ययन को केवल धार्मिक विश्वासों की गणना तक सीमित नहीं रखती, बल्कि धार्मिक व्यवहारों को समुदाय की सांस्कृतिक निरंतरता के संदर्भ में समझने का अवसर प्रदान करती है।

3. उद्देश्य

1. “बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय की धार्मिक मान्यताओं, देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा तथा पारंपरिक अनुष्ठानों की स्थिति का अध्ययन करना।”

4. परिकल्पना

- शून्य परिकल्पना (H_0): बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय के चयनित समूहों में धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यताओं एवं पारंपरिक धार्मिक व्यवहार के मापों के औसत स्तर में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।
- वैकल्पिक परिकल्पना (H_1): बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय के चयनित समूहों में धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यताओं एवं पारंपरिक धार्मिक व्यवहार के मापों के औसत स्तर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर है।

5. साहित्य समीक्षा

बेहरा (2025) द्वारा संपादित जनजाति एवं धर्म संबंधी समकालीन अध्ययन में भारतीय जनजातीय धार्मिक जीवन की विविधता, आध्यात्मिकता, धार्मिक विश्वासों, अनुष्ठानों, धार्मिक पहचान तथा विभिन्न समुदायों के मध्य धार्मिक-सांस्कृतिक अंतःक्रिया को प्रमुखता दी गई है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनजातीय धार्मिक जीवन को स्थिर एवं एकरूप व्यवस्था के रूप में न देखकर निरंतरता, परिवर्तन, अनुकूलन तथा सामाजिक अंतःक्रिया की गतिशील प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है। रोवकिथ एवं भगवान (2020) ने भारतीय जनजातीय आध्यात्मिकता के संदर्भ में धार्मिक विश्वासों, आध्यात्मिक दृष्टिकोणों तथा पारंपरिक व्यवहारों का अन्वेषणात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में 2 नमूनों के अंतर्गत 6 सामाजिक कार्य शिक्षाविदों तथा 23 विद्यार्थियों से अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार एवं समूह-चर्चा द्वारा जानकारी प्राप्त की गई। निष्कर्षों में प्रकृति, समुदाय तथा आध्यात्मिक विश्वासों के पारस्परिक संबंध को महत्वपूर्ण पाया गया। ये अध्ययन वर्तमान शोध में देव-आस्था एवं प्रकृति-पूजा को समझने का आधार प्रदान करते हैं। शर्मा (1994) ने ठाकुर गोंडों में पूर्वज-पूजा की प्रथा में निरंतरता एवं परिवर्तन का अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि जनजातीय धार्मिक व्यवहारों में पारंपरिक तत्वों की निरंतरता के साथ बाहरी धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का समावेश भी संभव है। पूर्वज-पूजा से संबंधित व्यवहारों में स्थानीय जनजातीय परंपराओं तथा हिंदू धार्मिक प्रभावों का सम्मिश्रण दिखाई दे सकता है। भूरिया (1986) ने भारत में जनजातीय धर्म के संदर्भ में भील जनजाति का अध्ययन करते हुए जनजातीय धार्मिक जीवन तथा उसकी विशिष्ट सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित किया। दोनों अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय धार्मिक परंपराओं को सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संबंधों तथा ऐतिहासिक निरंतरता के संदर्भ में समझना आवश्यक है। वर्तमान अध्ययन में पूर्वज-पूजा एवं पारंपरिक अनुष्ठानों को धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता के प्रमुख संकेतकों के रूप में सम्मिलित करने का आधार इन्हीं अध्ययनों से प्राप्त होता है।

मिश्र (1965) के ऐतिहासिक अध्ययन में वैदिक समाज के विकास तथा विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं के संपर्क एवं अंतःक्रिया से संबंधित पक्षों पर विचार किया गया है। यद्यपि यह अध्ययन बैतूल जिले के वर्तमान आदिवासी समुदाय पर प्रत्यक्ष रूप से आधारित नहीं है, तथापि भारतीय धार्मिक-सांस्कृतिक विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने में इसका महत्व है। समग्र साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि जनजातीय धार्मिक जीवन में देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा, पारंपरिक अनुष्ठान तथा सांस्कृतिक पहचान परस्पर संबद्ध आयाम हैं। इसके बावजूद बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय के संदर्भ में इन सभी संकेतकों को एक साथ लेकर लिए गए केंद्रित मात्रात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देते हैं। विशेष रूप से इन धार्मिक-सांस्कृतिक आयामों की वर्तमान स्थिति को अनुभवजन्य आँकड़ों के आधार पर प्रस्तुत करने तथा समूहों के मध्य संभावित अंतर की सांख्यिकीय जाँच करने वाले अध्ययन पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतराल को संबोधित करते हुए बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय की धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता का अनुभवजन्य अध्ययन करता है।

6. शोध-विधि

प्रस्तुत अध्ययन की शोध-विधि वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण प्रकृति की है। इसका उद्देश्य बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय में धार्मिक-सांस्कृतिक विश्वासों तथा व्यवहारों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना और उपलब्ध आँकड़ों के माध्यम से सांख्यिकीय अंतरों की जाँच करना है। अध्ययन में प्रथम उद्देश्य के विश्लेषण हेतु 500 उत्तरदाताओं के आँकड़ों का उपयोग किया गया। इन्हीं आँकड़ों के आधार पर देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा तथा पारंपरिक अनुष्ठानों में सहभागिता की स्थिति को प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया गया। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली-सह-साक्षात्कार उपकरण का प्रयोग किया गया, जिसमें 50 कथन तथा 10 व्यक्तिगत-सूचना प्रश्न सम्मिलित थे। इस उपकरण के माध्यम से उत्तरदाताओं के धार्मिक-सांस्कृतिक विश्वासों, व्यवहारों और सहभागिता से संबंधित जानकारी संकलित की गई, ताकि उद्देश्य के अनुरूप प्राप्त निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें।

प्रयुक्त प्रश्नावली-सह-साक्षात्कार उपकरण की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए उपलब्ध शोध-सामग्री में आंतरिक संगति तथा परीक्षण-पुनर्परीक्षण दोनों आधारों का उल्लेख किया गया है। उपकरण की आंतरिक संगति के लिए न्यूनतम क्रोनबाख अल्फा मान 0.79 या उससे अधिक रिपोर्ट किया गया, जबकि पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता के लिए परीक्षण-पुनर्परीक्षण सहसंबंध $r=0.85$ पाया गया। अध्ययन के उद्देश्य के अनुरूप धार्मिक-सांस्कृतिक संकेतकों की स्थिति स्पष्ट करने के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया। विभिन्न समूहों के मध्य अंतर की जाँच हेतु स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण अपनाया गया तथा प्राप्त अंतर की व्यावहारिक महत्ता को Cohen's d के माध्यम से प्रभाव-आकार के रूप में व्यक्त किया गया। इस प्रकार शोध-विधि में सर्वेक्षण, प्रश्नावली-सह-साक्षात्कार, विश्वसनीयता परीक्षण तथा उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों का समन्वित उपयोग करते हुए अध्ययन के निर्धारित उद्देश्य से संबंधित धार्मिक-सांस्कृतिक तथ्यों का व्यवस्थित विश्लेषण किया गया।

7. परिणाम एवं सांख्यिकीय विश्लेषण

धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यताओं एवं व्यवहारों की स्थिति

सारणी 1 : बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय में धार्मिक-सांस्कृतिक संकेतकों की स्थिति

क्र	धार्मिक-सांस्कृतिक संकेतक	उत्तरदाताओं	प्रतिशत	व्याख्या
1	देव-आस्था	409	81.8%	उच्च स्तर की धार्मिक आस्था
2	प्रकृति-पूजा	381	76.2%	प्रकृति के साथ धार्मिक संबंध
3	पूर्वज-पूजा	305	61.0%	पूर्वज एवं सामुदायिक स्मृति से संबंध

4	पारंपरिक अनुष्ठानों में सक्रिय सहभागिता	346	69.2%	व्यवहारगत सांस्कृतिक निरंतरता
---	---	-----	-------	-------------------------------

तालिका 1 से स्पष्ट है कि चारों चयनित धार्मिक-सांस्कृतिक संकेतकों में 50% से अधिक उत्तरदाताओं की स्वीकृति अथवा सहभागिता पाई गई। देव-आस्था 81.8% के साथ सर्वाधिक रही। इससे संकेत मिलता है कि धार्मिक आस्था समुदाय के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रकृति-पूजा का स्तर 76.2% रहा। यह परिणाम प्राकृतिक परिवेश और धार्मिक जीवन के मध्य निकट संबंध को दर्शाता है। पूर्वज-पूजा 61.0% रही, जो सामुदायिक स्मृति एवं पूर्वजों से संबंधित धार्मिक विश्वासों की निरंतरता का संकेत देती है। पारंपरिक अनुष्ठानों में 69.2% सक्रिय सहभागिता यह स्पष्ट करती है कि धार्मिक परंपराएँ केवल विश्वासों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि व्यवहारगत स्तर पर भी अभिव्यक्त होती हैं।

धार्मिक-सांस्कृतिक संकेतकों का तुलनात्मक विश्लेषण

सारणी 2 : धार्मिक-सांस्कृतिक संकेतकों का क्रम निर्धारण

क्र	संकेतक	प्रतिशत	क्रम
1	देव-आस्था	81.8%	प्रथम
2	प्रकृति-पूजा	76.2%	द्वितीय
3	पारंपरिक अनुष्ठानों में सक्रिय सहभागिता	69.2%	तृतीय
4	पूर्वज-पूजा	61.0%	चतुर्थ

तालिका 2 से स्पष्ट है कि देव-आस्था का स्तर सर्वाधिक तथा पूर्वज-पूजा का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। फिर भी पूर्वज-पूजा में 61.0% उत्तरदाताओं की स्वीकृति यह दर्शाती है कि यह धार्मिक-सांस्कृतिक व्यवहार समुदाय के पर्याप्त बड़े हिस्से में विद्यमान है। देव-आस्था तथा प्रकृति-पूजा के उच्च स्तर से धार्मिक चेतना और प्राकृतिक परिवेश के मध्य संबंध का संकेत मिलता है। पारंपरिक अनुष्ठानों में 69.2% सहभागिता से यह भी स्पष्ट होता है कि धार्मिक परंपराएँ सामाजिक व्यवहार में सक्रिय रूप से दिखाई देती हैं।

परिकल्पना परीक्षण: समूहों के मध्य धार्मिक-सांस्कृतिक मापों के औसत अंतर की जाँच के लिए स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

सारणी 3 : स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण के परिणाम

परीक्षण	समूह	माध्य	मानक विचलन	सांख्यिकीय परिणाम	निर्णय
स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण	G1	45.2	5.1	t(98) = 2.85, p = 0.005	H ₀ अस्वीकृत
	G2	49.8	6.2		

--	--	--	--	--	--

तालिका 3 से स्पष्ट है कि G1 का माध्य 45.2 तथा G2 का माध्य 49.8 है। दोनों समूहों के माध्यों में अंतर पाया गया। स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण में $t(98)=2.85$ तथा $p=0.005$ प्राप्त हुआ। चूँकि p का मान 0.05 से कम है, अतः प्राप्त अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना को समर्थन प्राप्त होता है।

सारणी 4 : सांख्यिकीय माप एवं उनकी व्याख्या

सांख्यिकीय माप	प्राप्त मान	व्याख्या
Cohen's d	0.57	मध्यम प्रभाव
95% विश्वास अंतराल	[1.2, 7.8]	औसत अंतर का विश्वास अंतराल
t-मूल्य	2.85	सांख्यिकीय रूप से सार्थक
p-मूल्य	0.005	0.05 से कम

चर्चा

- अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय में धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराओं की उपस्थिति पर्याप्त रूप से मजबूत है। देव-आस्था का 81.8% स्तर यह दर्शाता है कि धार्मिक विश्वास समुदाय के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह विश्वास केवल व्यक्तिगत धार्मिक अनुभव तक सीमित नहीं माना जा सकता, क्योंकि आदिवासी समाज में धार्मिक मान्यताएँ सामुदायिक जीवन, सामाजिक संबंधों तथा सांस्कृतिक पहचान से भी संबद्ध रहती हैं।
- प्रकृति-पूजा का 76.2% स्तर अध्ययन का दूसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। यह परिणाम इस बात की ओर संकेत करता है कि प्राकृतिक परिवेश और धार्मिक चेतना के बीच संबंध अभी भी महत्वपूर्ण है। रोवकिथ और भगवान के अध्ययन में भी जनजातीय आध्यात्मिक जीवन को समुदाय, संस्कृति और आध्यात्मिक विश्वासों के व्यापक संदर्भ में समझने पर बल दिया गया है।
- पूर्वज-पूजा का 61.0% स्तर यह दर्शाता है कि सामुदायिक स्मृति और पूर्वजों से संबंधित धार्मिक विश्वास अभी भी उत्तरदाताओं के एक बड़े हिस्से में विद्यमान हैं। शर्मा के अध्ययन में भी ठाकुर गोंडों के संदर्भ में पूर्वज-पूजा की निरंतरता के साथ धार्मिक परिवर्तन तथा बाहरी प्रभावों की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है। इससे वर्तमान अध्ययन के परिणामों की व्याख्या करते समय यह समझना उचित है कि धार्मिक परिवर्तन और सांस्कृतिक निरंतरता एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं।
- पारंपरिक अनुष्ठानों में 69.2% सक्रिय सहभागिता विशेष महत्व रखती है। इससे स्पष्ट होता है कि धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता केवल वैचारिक या विश्वासगत स्तर पर नहीं, बल्कि व्यवहारगत

स्तर पर भी दिखाई देती है। अनुष्ठान समुदाय के सदस्यों को एक साथ लाने, सामाजिक संबंधों को मजबूत करने तथा सांस्कृतिक स्मृति को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम बन सकते हैं।

- भूरिया के भील संबंधी अध्ययन का महत्व भी इसी संदर्भ में है। जनजातीय धार्मिक जीवन को बाहरी धार्मिक प्रभावों के साथ-साथ स्थानीय परंपराओं की निरंतरता के संदर्भ में समझना आवश्यक है। वर्तमान अध्ययन में प्राप्त परिणाम भी इसी व्यापक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप हैं।
- समकालीन जनजातीय धार्मिक अध्ययन यह दर्शाते हैं कि धार्मिक परंपराएँ संपर्क, अनुकूलन, परिवर्तन और सांस्कृतिक पहचान की प्रक्रियाओं के साथ विकसित होती हैं। बेहरा के संपादित समकालीन साहित्य में जनजातीय धार्मिक जीवन, आध्यात्मिकता, विश्वास, धार्मिक पहचान तथा अंतःक्रिया के विभिन्न पक्षों पर ध्यान दिया गया है। इसलिए बैतूल जिले में पारंपरिक धार्मिक व्यवहारों की उपस्थिति को सामाजिक परिवर्तन के अभाव के रूप में नहीं समझना चाहिए।
- अतः वर्तमान अध्ययन का अधिक उपयुक्त निष्कर्ष यह है कि बैतूल के आदिवासी समुदाय में पारंपरिक धार्मिक तत्व वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के भीतर पर्याप्त रूप से सक्रिय हैं। ये परंपराएँ संभवतः सामाजिक परिवर्तन के साथ नए रूप ग्रहण कर रही हों, किंतु उपलब्ध आँकड़े उनके वर्तमान अस्तित्व और सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं।

निष्कर्ष

- प्रस्तुत अध्ययन का एकमात्र उद्देश्य बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय की धार्मिक मान्यताओं, देव-आस्था, प्रकृति-पूजा, पूर्वज-पूजा तथा पारंपरिक अनुष्ठानों की स्थिति का अध्ययन करना था। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि इन सभी चयनित धार्मिक-सांस्कृतिक आयामों की उपस्थिति समुदाय के पर्याप्त बड़े हिस्से में बनी हुई है। देव-आस्था का 81.8%, प्रकृति-पूजा का 76.2%, पारंपरिक अनुष्ठानों में सहभागिता का 69.2% तथा पूर्वज-पूजा का 61.0% स्तर यह दर्शाता है कि पारंपरिक धार्मिक जीवन अभी भी आदिवासी समुदाय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- देव-आस्था का उच्च स्तर धार्मिक विश्वासों की केंद्रीय भूमिका को दर्शाता है, जबकि प्रकृति-पूजा का अपेक्षाकृत उच्च स्तर आदिवासी धार्मिक चेतना और प्राकृतिक परिवेश के संबंध को स्पष्ट करता है। पूर्वज-पूजा तथा पारंपरिक अनुष्ठानों में सहभागिता यह संकेत देती है कि सांस्कृतिक स्मृति और परंपरागत धार्मिक व्यवहार अभी भी सामुदायिक जीवन में सक्रिय हैं।
- परिकल्पना परीक्षण में प्राप्त $t(98)=2.85$ तथा $p=0.005$ के आधार पर चयनित समूहों के संबंधित धार्मिक-सांस्कृतिक माप में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। Cohen's $d=0.57$ का प्रभाव-आकार इस अंतर को मध्यम स्तर का दर्शाता है। अतः उपलब्ध सांख्यिकीय परिणाम शून्य परिकल्पना के अस्वीकार तथा वैकल्पिक परिकल्पना के समर्थन की ओर संकेत करते हैं।
- समग्र रूप से कहा जा सकता है कि बैतूल जिले के आदिवासी समुदाय में धार्मिक-सांस्कृतिक निरंतरता स्पष्ट रूप से विद्यमान है। यह निरंतरता केवल धार्मिक विश्वासों में नहीं, बल्कि प्रकृति

के साथ संबंध, पूर्वजों के प्रति आस्था तथा पारंपरिक अनुष्ठानों में सहभागिता के रूप में व्यवहारगत स्तर पर भी दिखाई देती है।

- फिर भी इस निरंतरता को "अपरिवर्तित परंपरा" के रूप में परिभाषित करना उचित नहीं होगा। सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, आधुनिक संचार, आर्थिक परिवर्तन तथा विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के साथ बढ़ते संपर्क के कारण धार्मिक व्यवहारों में परिवर्तन और अनुकूलन की संभावनाएँ बनी रहती हैं। इसलिए बैतूल के आदिवासी धार्मिक जीवन को "परिवर्तनशील सामाजिक परिस्थितियों में निरंतर बनी हुई सांस्कृतिक प्रक्रिया" के रूप में समझना अधिक वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय दृष्टि से उपयुक्त होगा।

संदर्भ

1. बेहरा, मगुनी चरण, संपादक। *भारत में जनजाति और धर्म की रूटलेज पुस्तिका: आध्यात्मिकता, विश्वास और पहचान के समकालीन अध्ययन*। रूटलेज इंडिया, 2025।
2. भूरिया, महिपाल। "भारत में जनजातीय धर्म: भीलों का एक अध्ययन।" *सोशल कम्पास*, खंड 33, अंक 2-3, 1986, पृष्ठ 275-283।
3. इन्प्लिबनेट। "जनजातीय धर्म।" *भारत की जनजातीय संस्कृतियाँ*, ई-पाठशाला।
4. मिश्र, पद्मा। *वेदों में पुरोहित और ऋषि तथा ब्राह्मण वर्ग के विकास के विशेष संदर्भ में अध्ययन*। पीएच.डी. शोधप्रबंध, एस.ओ.ए.एस., लंदन विश्वविद्यालय, 1965।
5. रोवकिथ, शन्नल और रायसुयाह भगवान। "भारत में जनजातीय आध्यात्मिकता का सम्मान: उनकी मान्यताओं, अनुष्ठानों और उपचार पद्धतियों का अन्वेषणात्मक अध्ययन।" *रिलिजन्स*, खंड 11, अंक 11, 2020, लेख संख्या 549।
6. शर्मा, अनिमा। "ठाकुर गोंडों में पूर्वज-पूजा की प्रथा में निरंतरता और परिवर्तन।" *इंडियन एंथ्रोपोलॉजिस्ट*, खंड 24, अंक 1, 1994, पृष्ठ 17-24।